माननीय राज्यपाल महोदय श्री राम नरेश यादव का विश्व बंधुत्व दिवसर के समारोह में उद्‌बोधन

स्थान :- राजस्थान, दिनांक 25 अगस्त, 2013 समय :- दोपहर 12:40 बजे

आदरणीय दादी जानकी जी,दादी हृदयमोहिनी जी,भ्राता निर्वैर जी,भ्राता मृत्युंजय जी एवं देश भर से आये हुए सभी ब्रम्हकुमार एवं ब्रम्हकुमारियां।

आज मैं आदरणीय दादी प्राकाशमणि जी जैसी महान विभूति की पुण्य तिथि पर श्रद्‌धांजलि अर्पित करते हुए स्वयं को अत्यंत सौभाग्यशाली अनुभव कर रहा हूं।

वर्तमान समय विश्व नैतिक मूल्यों के हास के संकट से जूझ रहा है। विभिन्न प्रकार का तनाव,आपसी संबंधों में विरोधाभास,एक दो में ईष्र्या-द्‌वेष,घृणा आदि नकारात्मक विचारों के कारण स्नेह भाव,प्रेम भाव,भ्रातृत्व भाव भूलते जा रहे हैं। ऐसे समय पर "विश्व बंधुत्व दिवस' के रूप में इस संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी की पुण्य तिथि पर मात्र श्रद्‌धांजलि अर्पित नहीं करना है अपितु ऐसी आध्यात्मिक नेत्री द्‌वारा निर्दिष्ट मार्गदर्शन में चलना हम सबका कर्तव्य है।

दादी प्रकाशमणि एक आध्यात्मिक नेत्री थीं,जिन्होंने न केवल महिलाओं को शक्ति स्वरूप बनाकर पूरे विश्व को बदलने के लिए प्रेरित किया,अपितु समस्त मानव जाति में मूल्यों को पोषित कर श्रेष्ठ बनाने का भी प्रयास किया जिसके परिणामस्वरूप इस संस्था में करीब 25 हजार बहनें संपूर्ण समर्पित होकर समाज की सेवा में संलग्न है तथा लाखों युवक भी आदर्श जीवन जीते हुए समाज सेवा में जुड़े हुए हैं।

यह खुशी की बात है कि यह संस्था के साकार माध्यम"ब्राम्ह बाबा' और शिवबाबा की शिक्षा एवं मार्गदर्शन पर चलकर करीब 137 देशों में 85 सौ सेवा केन्द्रों द्‌वारा आध्यत्मिक,नैतिक,चारित्रिक उत्थान की शिक्षा दी जा रही है।

दादी जी न केवल भारत ही नहीं,अपितु पश्चिमी देशों में भी अपने ज्ञान और आध्यात्मिक प्रकाश से समस्त मानव जाति को आलोकित किया। प्रजापति ब्राम्ह बाबा के निर्देशानुसार दादी सन्

1954 में पहली बार जापान में हुए वर्ल्ड रिलीजस कॉन्फ्रेन्स के निमन्त्रण पर पहुंची तथा ईश्वरीय ज्ञान को वैश्विक मंच पर प्रत्यक्ष किया। इसके अतिरिक्त दादी जी ने अन्य देशों जैसे कि थाईलैण्ड़,इन्डोनेशिया,हांगकांग,सिंगापुर,श्रीलंका आदि देशों में भ्रमण कर हजारों भाई-बहनों को ईश्वरीय संदेश देकर,परमात्मा कार्य में सहयोगी बनाया।

सन् 1969 में संस्था के साकार संस्थापक "प्रजापिता ब्रम्ह बाबा' ने अपने देहावसान की पूर्व संध्या पर दादी जी के अदम्य साहस,निष्ठा,ईमानदारी तथा विश्व-कल्याण की सेवाओं में समर्पणता को देखते हुएअपना हाथ दादी जी के हाथ में देते हुएब्रम्हकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बागडोर सौंपी। उन्होंने बाबा द्वारा दी गयी इस जिम्मेवारी को पूरी निष्ठापूर्वक निभाते हुए बाबा के सपनों को साकार किया।

अध्यात्म की जयोति लेकर दादी जी ने देश ही नहीं,अपितु विदेशों में भी प्राचीन भारतीय संस्कृति,सभ्यता और राजयोग के सिद्धान्तों को लेकर,उच्च जीवन प्रणाली के लिए सभी को अभिप्रेरित किया। दादीजी के कुशल संचालन में ईश्वरीय विश्वविद्यालय में व्यक्तित्व निर्माण की आभा इतनी प्रदीप्त हुईजिसके फलस्वरूप देश-विदेश में आठ हजार सेवाकेन्द्रों की स्थापना हुई और हजारों भाईबहनें ईश्वरीय कार्य में समर्पित हुए। वे एक अभिभावक के रूम में समस्त लोगों की पालन करती रहीं।

दादी जी की आध्यात्मिक प्रतिभा से प्रभावित होकर भारत के विभिन्न राज्यों के राज्यपालों,मुख्यमन्त्रियों और महामण्डलेश्वरों ने उन्हें अपने-अपने स्थानों पर बुलाया। दादी जी के पवित्र और ओजस्वी उद्बोधन ने अनेक लोगों को लाभान्वित किया। राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल डॉ.एम.चेन्ना रेड्डी समेत कई राज्यों के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्रियों ने दादी जी को विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने स्थानों पर बुलाकर सम्मानित किया और उनसे आर्शीवाद प्राप्त किया। शिकागो में "विश्व धर्म संसद' के शताब्दी कार्यक्रम में भी उन्हें अध्यक्ष मनोनीत किया गया तथा अपने प्रभावशाली वक्तव्य द्वारा उन्होंने सभा को अभिभूत किया।

दादी जी की गौरवमयी आभा केवल भारत ही नहीं,अपितु पश्चिमी देशों के लोग भी मानने लगे थे। सन् 2000 में जब दादी जी ईश्वरीय सेवार्थ अमेरिका गयी,उस समय वाशिंगटन टी.पी में तत्कालीन मेयर ने दादी जी के कर कमलों से वृक्षारोपण कराकर उसका नामकरण "ओमशान्ति

ट्री' के रूप में किया। आज भी वहां प्रतिवर्ष 10 जून को "प्रकाशमणि दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

आज दादी प्रकाशमणि हमारे बीच नहीं हैं,परन्तु उनकी आभा,उनके दिव्य कर्म आज भी हमें श्रेष्ठता की ओर ले जाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। दादी जी की छठवीं पुण्य तिथि पर हम सभी शत-शत नमन करते हैं।

जय हिन्द।